श्रीसोमनाथसंस्कृतयुनिवर्सिटी, वेरावलम्

डिप्लोमा अभ्यासक्रमः (W.E.F 2020-21)

कक्षा	डिप्लोमा इन पुरालिपि, पाण्डुलिपि-विज्ञान एवं समीक्षित पाठ-सम्पादन की प्रक्रिया।	समयावधिः	१ वर्षम्
प्रश्नपत्रम् -१	*भारत की पुरातन लिपियाँ* (Ancient Scripts of India)	गुणाः	७०
विषय कोड	७४ (DiPPV)	पेपर कोड	७४१
युनिट	०३	क्रेडिट	०३

युनिट	निर्धारित विषय-बिन्दु की सूचि	घण्टे	गुणांक	क्रेडिट
1	(क) प्राचीन भारतीय लेखनकला का इतिहास, (ख) ब्राह्मी-लिपि का परिचय (स्वर-व्यंजन-संयुक्ताक्षर, एवं संख्याएं), वाचन का इतिहास, लिपि की वैज्ञानिकता, परवर्ती काल की लिपियों की जननी के रूप में परिचय।	16	25	1
2	(क) प्रमुख एवं दुर्लभ लिपियों का परिचय, उत्पत्ति, महत्त्व एवं उपयोग, (ख) शारदा, नेवारी, मैथिली एवं प्राचीन देवनागरी का लेखन-वाचन का अभ्यास	13	30	1
3	(क) दक्षिण भारत की लिपियाँ- ग्रन्थ, नन्दिनागरी, (ख) मोडी, तिगलारी, तेलुगुलिपियों का लेखन-वाचन का अभ्यास	16	35	1

(क) हेतुः-इस प्रश्नपत्र (पाठ्यक्रम) से विद्यार्थी भारत की प्राचीन लिपियों के उद्भव एवं विकास, तथा परिवर्तन-यात्रा जान सकेगा। प्राचीन लिपियों में लिखी पाण्डुलिपियों को पढने की एवं उनको देवनागरी में रूपान्तरित करने की क्षमता अर्जित कर सकेगा ।।

(ख) सन्दर्भ-सूचिः-

1. भारत की प्राचीन लिपिमाला, ग्रन्थकारः- रावबहादूर गौरीशंकर ही. ओझा, मुनशीराम मनोहरलाल, दिल्ली, 1966
2. शारदा-लिपिमाला, डॉ. कीर्तिकान्त शर्मा, इन्दिरा गान्धीराष्ट्रिय कला केन्द्र, दिल्ली
3. भारतीय पुरालिपि मञ्जुषा, (ब्राह्मी-शारदा-ग्रन्थ-नागरी लिपि प्रवेशिका), डॉ. उत्तम सिंह, प्रकाशकः- श्रीकैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर, कोबा, गांधीनगर, 2016

REGISTRAR,
Shree Somnath Sanskrit University
Veraval, Dist. Junagadh (Gujarat)

27 OCT 2020

श्रीसोमनाथसंस्कृतयुनिवर्सिटी, वेरावलम्
डिप्लोमा अभ्यासक्रमः (W.E.F 2020-21)

कक्षा	डिप्लोमा इन पुरालिपि, पाण्डुलिपि-विज्ञान एवं समीक्षित पाठ-सम्पादन की प्रक्रिया ।	समयावधिः	१ वर्षम्
प्रश्नपत्रम् -२	*पाण्डुलिपि-विज्ञान* (Manuscript logy)	गुणाः	७०
विषय कोड	७४ (DiPPV)	पेपर कोड	७४२
युनिट	०३	क्रेडिट	०३

युनिट	निर्धारित विषय-बिन्दु की सूचि	घण्टे	गुणांक	क्रेडिट
1	(क) संस्कृत, पालि, प्राकृत ग्रन्थों के पाठों का पञ्चविधत्व, (ख) पाण्डुलिपियों का बहिरंग परिचय (मार्जिन, पंक्ति, फोलियो, ग्रन्थ का श्लोक-प्रमाण), लेखनशैलियाँ, लिपिकारों की प्रार्थनाएं, (ग) भूर्जपत्र, ताडपत्र एवं कागज की पाण्डुलिपियों के प्रकार, पुष्पिका, संवत्सर-वाचन एवं प्राचीन संवत्सरों का ईसवीय सन में परिवर्तन	16	35	1
2	(क) देश के प्रमुख पाण्डुलिपि-संग्रहालयों का परिचय, वेब-साईट्स से केटलोग एवं पाण्डुलिपियों का डाउन-लोर्डिंग (कॉपी प्राप्त करने की विधियाँ), सहायक-सामग्री का स्वरूप (ख) पाण्डुलिपियों की दुरस्ती, भावि-संरक्षण और सूक्ष्मचित्रण (डिजीटाईजेशन), (ग) पाण्डुलिपियों की विवरणात्मक सूचियों का परिचय, केटलोगींग करने की प्रविधि, न्यू केटलोगस केटलोगरम का परिचय ।	13	30	1
3	(क) पाण्डुलिपियों में पाठविचलन के कारण तथा प्रकार, (ख) संतुलन-पत्रिका का स्वरूप, पाण्डुलिपियों के पाठान्तरों का संतुलन-पत्रिकाओं में पुनर्लेखन, कंम्प्युटर की एक्सल-शीट पर संतुलन-पत्रिका बनाने की विधि सिखना (ग) टीकाकारों के द्वारा उद्धृत पाठभेदों का मूल्य	16	35	1

हेतुः- इस प्रश्नपत्र के अभ्यास से विद्यार्थी प्राचीन पाण्डुलिपि विषयक गति-विधियाँ, भारत की लेखनकला एवं तत्सम्बद्ध इतिहास से अवगत होगा । तथा पाण्डुलिपियों की सुरक्षा, विनियोग, वितरण, पुनः प्राप्ति के उपायादि से अवगत होगा । प्राचीन काल के अप्रकाशित ग्रन्थों की ज्ञानसंपदा के प्रति अभिमुख होगा ।

REGISTRAR,
Shree Somnath Sanskrit University
27 OCT 2020 Veraval, Dist. Junagadh (Gujarat)

सन्दर्भ-सूचिः-

1. Manuscriptology and Text Criticism, by JayantThaker, Pub. Oriental Institute, M. S. University, Vadodara, 2002
2. The Fundamentals of Manuscriptology, by P. Visalashy, Dravidian Linguistics Association, Thiruvanantapuram, 2003
3. पाण्डुलिपि विज्ञान, डॉ. सत्येन्द्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादेमी, जयपुर, 1989
4. भारतीय जैनश्रमण संस्कृति अने लेखनकळा, मुनिश्री पुण्यविजय जी म.सा., जैनचित्रकल्पद्रुम – नामक ग्रन्थ में प्रकाशित, प्रका. श्री साराभाई नवाब, 1935 (पुनर्मुद्रणः- श्रुतरत्नाकर, अमदावाद,
5. भारतीय पाठालोचन की भूमिका, अनुवादकः- उदयनारायण तिवारी, मध्यप्रदेश हिन्दी अकादेमी, भोपाल, 1971
6. संस्कृत पाण्डुलिपिओं अने समीक्षित पाठसम्पादन-विज्ञान, वसन्तकुमार म. भट्ट, सरस्वती पुस्तक भण्डार, अमदावाद, 1994 एवं परिवर्धित संस्करण 2009
7. पाठसम्पादन के सिद्धान्त, डॉ. कन्हैया सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1988
8. हस्तप्रतविद्या अने आगमसाहित्य – संशोधन अने सम्पादन, संपादिका- निरंजना वोरा, गूजरात विद्यापीठ, अमदावाद, 1999.

REGISTRAR,
Shree Somnath Sanskrit University
Veraval, Dist. Junagadh (Gujarat)

27 OCT 2020

श्रीसोमनाथसंस्कृतयुनिवर्सिटी, वेरावलम्
डिप्लोमा अभ्यासक्रमः (W.E.F 2020-21)

कक्षा	डिप्लोमा इन पुरालिपि, पाण्डुलिपि-विज्ञान एवं समीक्षित पाठ-सम्पादन की प्रक्रिया ।	समयावधिः	१ वर्षम्
प्रश्नपत्रम् -३	*समीक्षित पाठ-सम्पादन की पद्धतियाँ* (Methods of Critical Text Editing)	गुणाः	७०
विषय कोड	७४ (DiPPV)	पेपर कोड	७४३
युनिट	०३	क्रेडिट	०३

युनिट	निर्धारित विषय-बिन्दु की सूचि	घण्टे	गुणांक	क्रेडिट
1	(क) संतुलन-पत्रिकाओं के अभ्यास से प्राप्त पाण्डुलिपियों के आनुवंशिक संबन्ध को ढूँढने की प्रक्रिया, पाण्डुलिपियों का वंशवृक्ष बनाना, (ख) वाचनाओं का निर्धारण करने के नियम, तथा मूलादर्श-प्रति के पाठ का अनुमान करने की नियमावली । (ग) पाठ-सुधारणा कब और कैसे ?।, उच्चतर समीक्षा की विभावना	16	35	1
2	(क) अशुद्धियाँ एवं पाठान्तरों में भेद, अनुलेखनीय सम्भावनामूलक पाठान्तर और आन्तरिक सम्भावनामूलक पाठान्तर, पाठ-सुधारण के लिए विविध कोष्टकों (कौंस) का विनियोग, (ख) पाठ-सम्पादन के त्रिविध सम्प्रदाय, (=उत्तम, प्राचीनतम एवं बहुसंख्यक =संदोहन पद्धति से पाण्डुलिपियों के सम्प्रदायों) (ग) पाठ-सम्पादन के अधिनियम, पाठसम्पादन में मधुकर-वृत्ति (यानी इकलेक्टीक प्रिन्सीपल्स), एकाकी पाण्डुलिपि के सम्पादन में द्विविध दृष्टिकोण, 1. रूढिवादी एवं 2. उदारतावादी ।	13	30	1
3	(क) महाभारत एवं रामायण की समीक्षितावृत्तियों का परिचय, (ख) समीक्षित आवृत्ति का प्रारूप (पाण्डुलिपियों का विवरण, सांकेतिक नाम, निदर्शात्मक फोटोग्राफ, स्थल-काल, वंशवृक्ष, सम्पादन के स्वीकृत नियमादि सूचनाओं से युक्त प्रस्तावना, मान्य किये पाठ का प्रतिष्ठापन, पादटिप्पणीयाँ, परिशिष्टों में प्रक्षेपों का समावेश, विविध शब्दानुक्रणिकाएँ बनाना) (ग) किसी शारदा अथवा ग्रन्थ पाण्डुलिपि के 15 पृष्ठों का देवनागरी में लिप्यन्तरण । एवं उन्हीं 15 पृष्ठों का प्रायोगिक संपादन ।।	16	35	1

REGISTRAR,
Shree Somnath Sanskrit University
Veraval, Dist. Junagadh (Gujarat)
27 OCT 2020

(क) हेतुः-इस प्रश्नपत्र के अभ्यास से विद्यार्थी-गण पाण्डुलिपियों में संचरित हुए अशुद्ध पाठ एवं पाठान्तरों से भरे ग्रन्थों के प्राचीन से प्राचीनतर, एवं प्राचीनतर से प्राचीनतम स्वरूप की खोज करने की प्रविधि से परिचित होगा। सर्वाधिक श्रद्धेय पाठ की प्राप्ति की तर्कशृंखला को जान सकेगा एवं पाठसम्पादन के सर्वमान्य सिद्धान्तों को जान सकेगा। अन्ततोगत्वा पाण्डुलिपियों से समीक्षित पाठसम्पादन तैयार करने की योग्यता प्राप्त कर सकेगा।।

(ख) सन्दर्भ-सूचिः-

1. Introduction to Indian Textual Criticism, by S. M. Katre, Publication : Deccan College, Poona, 1954 (Sanskrit, Hindi, Gujarati translation are available)
2. The Critical Edition of the Mahabharata (Aadi-parvan), Ed. By V. S. Sukathankar, Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, 1933 (in this volume there is "Prolegomena to Mahabharata" as introduction. This is the basic text book for any textual criticism.)
3. Critical Edition of the Ramayana, Ed. Govindlal H. Bhatt, Oriental Institute, Vadodara, 1954 (Preface of the Bala-kandam)
4. On the Meaning of the Mahabharata, V. S. Sukthankar, MotilalBanarasidass, Delhi, 2016
5. अभिज्ञानशाकुन्तल का पाठपरामर्श। वसन्तकुमार म. भट्ट, प्रकाशकः- आर्य समाज गुरुकुल, माउन्ट आबु, 2015

----- ------- ।। इति समाप्तम् ।।------- --------

REGISTRAR,
Shree Somnath Sanskrit University
Veraval, Dist. Junagadh (Gujarat)
27 OCT 2020